संस्थान समाचार

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी) संस्था और उसके केंद्रो की समाचार पत्रिका

■ प्रकाशन : वर्ष : 11 ■ अंक : 65 ■ जनवरी 2025

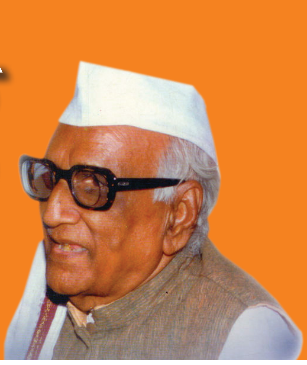

धूम-धाम से मनाया गणतंत्र दिवस

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा मुख्यालय सहित सभी क्षेत्रीय केंद्रों पर गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन धूमधाम से किया गया। माननीय उपाध्यक्ष प्रो. सुरेन्द्र दुबे की अध्यक्षता एवं संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी के नेतृत्व में प्रभात फेरी का प्रारम्भ प्रातः 7:50 पर किया गया जिसमें स्वदेशी एवं विदेशी विद्यार्थियों के साथ सभी शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक सदस्य मौजूद रहे। प्रभात फेरी संस्थान परिसर से खंदारी चौराहा से होते हुए पुनः संस्थान परिसर पहुँचकर समाप्त हुई। इसके बाद संस्थान परिसर में माननीयों द्वारा ध्वाजारोहण किया गया। इस अवसर पर अध्यापक शिक्षा विभाग के प्रशिक्षणार्थियों द्वारा स्कॉउट एवं गाइड की परेड का प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. भास्कर कृष्णाजी दुबे ने तथा सभी का धन्यवाद ज्ञापन संस्थान के कुलसचिव डॉ. चंद्रकांत त्रिपाठी ने किया।

76वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर संस्थान के गाँधी भवन में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें स्वदेशी एवं विदेशी विद्यार्थियों ने रक्त दान भी किया। इस कार्यक्रम में संस्थान के सभी विभागों के विभागाध्यक्ष एवं सभी शैक्षिक एवं प्रशासनिक सदस्य उपस्थित रहे। इससे पूर्व केंद्रीय हिंदी संस्थान के अटल बिहारी वाजपेई अंतर्राष्ट्रीय सभागार में गणतंत्र दिवस समारोह की पूर्व संध्या पर प्रतिष्ठित गायक श्री सुधीर नारायण द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम के संचालक डॉ पुरुषोत्तम पाटील ने सुधीर नारायण का परिचय दिया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. प्रणीता मिश्रा द्वारा किया। कार्यक्रम में केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष प्रोफेसर सुरेंद्र दुबे, केंद्रीय हिंदीसंस्थान के निदेशक प्रो सुनील बाबू राव कुळकर्णी, कुलसचिव डॉ चंद्रकांत त्रिपाठी एवं गणमान्य अतिथिगण के साथ सभी विभागों के विभागाध्यक्ष, शैक्षिक सदस्य तथा प्रशासनिक सदस्य उपस्थित रहे।

संस्थान के दिल्ली क्षेत्रीय केंद्र पर क्षेत्रीय निदेशक की अगुवाई में झंडारोहण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर केंद्र के सभी शैक्षिक एवं प्रशासनिक वर्ग के सदस्य तथा अन्य संबंधित कार्मिक भी उपस्थित थे।

इस क्रम में केंद्रीय हिंदी सस्थान, हैदराबाद केंद्र पर डॉ. फत्ताराम नायक, (एसोसिएट प्रोफेसर) द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर उन्होंने देश की आजादी के लिए शहीद हुए बलिदानियों को नमन करते हुए उन्हें अपनी श्रद्धा सुमन अर्पित की। इस अवसर पर संस्थान के अध्यापक डॉ. दीपेश व्यास ने संविधान की धाराओं और मौलिक अधिकारों पर अपने विचार व्यक्त किए। श्री शेख मस्तान वली ने देश की आजादी के लिए गांधी जी द्वारा चलाए गए आंदोलन एवं डॉ. भीमराव अंबेडकर द्वारा प्रदत संविधान के ऊपर अपने विचार प्रकट किए। डॉ. संदीप कुमार तथा सजग ने भी अपने विचार प्रकट किए। इस अवसर पर संस्थान के सभी कर्मचारी उपस्थित रहे।

शेष पृष्ठ 6 पर...

विश्व हिंदी दिवस पर विदेशी विद्यार्थियों ने दी प्रस्तुति

दिनांक 13/01/2025 को जवाहर लाल भवन, नई दिल्ली में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबूराव कुळकर्णी की गरिमामयी उपस्थिति रही। विदेश मंत्रालय के अधिकारियों द्वारा निदेशक महोदय का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया गया। कार्यक्रम में मुख्यालय आगरा तथा दिल्ली केंद्र के अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों सहित अध्यापक एवं संबंधित प्रशासनिक सदस्य भी उपस्थित रहे। उक्त कार्यक्रम में मंच पर श्री गनोई-निदेशक (आर.आर.बी, आई.एण्ड टी.), श्री जयदीप मजूमदार-सचिव

(पूर्व), श्री राजेश वैष्णव-अपर सचिव (आर.आर.बी, आई.एण्ड टी.) मुख्य रूप से उपस्थित थे। श्री राकेश दुग्गल-मंत्रालय न्याचार अधिकारी ने हिंदी दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री द्वारा भेजे गए संदेश का वाचन किया। कार्यक्रम की शुरूआत मुख्यालय आगरा के छात्रों द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वंदना से हुई। कार्यक्रम में विदेशी विद्यार्थियों द्वारा मेरे रोम रोम में बसने वाले राम, पुष्प की अभिलाषा, हम होंगे कामयाब, देश भक्ति गीत, समूह गान, वैष्णव भवन पीर पराई जाने रे आदि गीतों पर प्रस्तुति दी गई। इस अवसर पर मुख्यालय तथा दिल्ली केंद्र पर विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत विद्यार्थियों को प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार प्रदान किए गए।

मालूम हो कि विदेश मंत्रालय हर साल 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन करता है, जिसमें केंद्रीय हिंदी संस्थान के विदेशी विद्यार्थियों को आमंत्रित किया जाता है।

इस अवसर पर विभिन्न विश्वविद्यालयों में भाषण, कविता, भजन आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है, जिनमें प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विजेताओं

शेष पृष्ठ 7 पर...

विभिन्न प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने दिखाया अपना हुनर

दिनांक 13.01.2025 को केंद्रीय हिंदी संस्थान के क्रीड़ा प्रांगण में अध्यापक शिक्षा विभाग के सत्र 2024-25 के पाँच दिवसीय स्काउट गाइड शिविर (13.01.25-17.01.2025) प्रारंभ हुआ जिसमें भारत स्काउट-गाइड के जिला स्तरीय ट्रेनिंग काउंसलर श्री वीरेंद्र कुमार कुशवाहा, श्री मनोज कुमार एवं सुश्री यशोदा कुमारी ट्रेनर के रूप में नियुक्त रहे। शिविर में हिंदी शिक्षण पारंगत- प्रथम वर्ष के 59 प्रशिक्षणार्थी, प्रवीण- प्रथम वर्ष के 55 प्रशिक्षणार्थी एवं तृतीय वर्ष के 10 प्रशिक्षणार्थी कुल 124 प्रशिक्षणार्थी सम्मिलित हुए। शिविर का उद्घाटन संस्थान के शैक्षिक समन्वयक प्रो. हरिशंकर ने वेडेन पॉवेल के चित्र पर माल्यार्पण एवं ध्वजारोहण कर किया।

शिविर के उद्घाटन सत्र में स्काउट गाइड प्रशिक्षकों द्वारा टोली व्यवस्था, सेल्यूट नियम, प्रतिज्ञा विभिन्न प्रकार की तालियाँ, झंडा गीत, राष्ट्रीय गान एवं स्काउट गाइड फाइल बनाने के तरीके सिखाए गए। शिविर के दूसरे दिन(14 जनवरी) प्राथमिक चिकित्सा, गांठे बंधन एवं खोज के संकेत, हाथ के संकेत, सीटी संकेत, फस्ट एंड फायर फाइटिंग, प्राथमिक चिकित्सा, गांठे बंधन आदि की प्रायोगिक क्रियाएँ सीखाई गयी।

पांच दिवसीय स्कॉउट एवं गाइड शिविर

स्कॉउट एवं गाइड शिविर के तीसरे दिन (15 जनवरी) को हाइक भ्रमण का आयोजन किया गया। अध्यापक शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर चंद्रकांत कोठे द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को हरी झंडी दिखाकर हाइक भ्रमण के लिए रवाना किया गया। हाइक भ्रमण में विभाग के कुल 124 प्रशिक्षणार्थी सम्मिलित रहे। हाइक स्थल तक पहुँचने के लिए सभी प्रशिक्षणार्थी 05 किलोमीटर दायरे में गुप्त संकेतों और चिह्नों का अनुसरण करते हुए बम्बई वाली बगीची पहुँचे। कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को स्वलपाहार का वितरण किया गया। हाइक भ्रमण के पश्चात विभिन्न प्रकार की गांठे एवं टैन्ट बनाने के निर्देश दिए गए।

स्कॉउट एवं गाइड शिविर के चतुर्थ दिन (16 जनवरी) को टैंट पिचिंग और फूड प्लाजा (पाक कला) कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, ने किया। विभाग के कुल 124 प्रशिक्षणार्थियों की 12 टोलियों ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग करते हुए विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ तैयार किए। इस दौरान निर्णायक मंडल के सदस्य डॉ. निरंजन सिंह एवं डॉ. रेणु चौधरी टैंट और फूड प्लाजा(पाक कला) का निरीक्षण किया।

स्कॉउट एवं गाइड शिविर के पांचवे दिन (17 जनवरी) दीक्षा संस्कार के साथ समापन समारोह आयोजित किया गया जिसमें मुख्य अतिथि श्रीमती प्रीति सागर, प्रादेशिक जिला संगठन आयोग, आगरा मंडल, आगरा रहीं। शिविर के दौरान छात्रों ने जो अनुभव अर्जित किए उन्हें सूचीबद्ध किया गया। कार्यक्रम के दौरान स्कॉउट एवं गाइड टोलियों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गयी। निर्णायक मंडल के सदस्यों के रूप में डॉ. निरंजन सिंह, (पुस्तकालयाध्यक्ष), एवं डॉ. रेणु चौधरी, (असिस्टेंट प्रोफेसर) रहीं।

कार्यक्रम में डॉ. तस्मीना हुसैन, एसो. प्रो. ने शिविर के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के परिणाम घोषित किये, जिसमें टेंट पिचिंग में टोली नंबर 8 को प्रथम, टोली नंबर 4 और 12 को द्वितीय तथा टोली नंबर 5 और 9 को तृतीय स्थान प्रदान किया गया। भोजन परिणाम में टोली नंबर 7 को प्रथम, टोली नंबर 9 और 10 को द्वितीय तथा टोली नंबर 2 और 12 को तृतीय स्थान प्रदान किया गया। सांस्कृतिक प्रतियोगिता में टोली नंबर 1 को प्रथम, टोली नंबर 3 और 11 को द्वितीय एवं टोली नंबर 6 और 7 को तृतीय स्थान प्रदान किया गया। स्कॉउट एवं गाइड शिविर की संयोजक डॉ. राजश्री ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा धन्यवाद ज्ञापन सह-संयोजिका डॉ. नीलम मिश्रा द्वारा किया गया। कार्यक्रम में सभी विभागीय, शैक्षिक तथा प्रशासनिक सदस्य उपस्थित रहे।

लंबी कूद में महंत तो ऊँची कूद में सी. चुमई अव्वल

अध्यापक शिक्षा विभाग द्वारा क्रीड़ा प्रतियोगिता आयोजित

दिनांक 29 जनवरी बुधवार को केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के क्रीड़ांगन में अध्यापक शिक्षा विभाग द्वारा तीन दिवसीय (दिनांक 27.01.2025 से 29.01.2025) क्रीड़ा प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। क्रीड़ा प्रतियोगिता का उद्घाटन माननीय उपाध्यक्ष प्रो. सुरेंद्र दुबे, द्वारा किया गया। इस मौके पर शैक्षिक समन्वयक प्रो. हरिशंकर, कुलसचिव डॉ. चंद्रकांत त्रिपाठी एवं अध्यापक शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. चंद्रकांत कोठे उपस्थित रहे।

उद्घाटन सत्र में छाता ड्रिल एवं साड़ी ड्रिल के माध्यम से केंद्रीय हिंदी संस्थान 1961 की स्थापना को दर्शाया गया। तत्पश्चात 100 मीटर रेस (महिला वर्ग), 100 मीटर रेस (पुरुष वर्ग), गोला फेंक (महिला वर्ग), बैडमिनटन (महिला व पुरुष वर्ग दोनों), वॉलीबॉल (महिला व पुरुष वर्ग दोनों) एवं रस्साकसी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

दूसरे दिन (28 जनवरी) 200 मीटर दौड़ (महिला वर्ग), 200 मीटर दौड़ (पुरुष वर्ग), ऊँची कूद (महिला व पुरुष वर्ग), लम्बी कूद (महिला व पुरुष वर्ग),वॉलीबॉल (महिला व पुरुष वर्ग), बैडमिंटन (महिला व पुरुष वर्ग) का आयोजन किया गया। तत्पश्चात क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

तीसरे दिन (29 जनवरी) को 100 मीटर दौड़ (महिला वर्ग), 100 मीटर दौड़ (पुरूष वर्ग), वॉलीबॉल (महिला वर्ग), वॉलीबॉल (पुरूष वर्ग), बैडमिंटन (महिला वर्ग), बैडमिंटन (पुरूष वर्ग), क्रिकेट एवं रस्साकसी प्रतियोगिताओं के फाइनल मैच खेले गये। समारोह में खेल संयोजक डॉ. तस्मीना हुसैन द्वारा क्रीड़ा प्रतियोगिताओं के परिणाम घोषित किये गये जिनमें 100 मीटर दौड़ (महिला वर्ग) में त्युखुम्ला चिम्युंगर प्रथम, इम्वापांगला एल इमसोंग द्वितीय एवं इनाली तृतीय स्थान पर रहीं। 100 मीटर दौड़ (पुरूष वर्ग) में स्वागत कुमार महंत प्रथम, चाला गौरी शंकर द्वितीय एवं दयानिधि कण्डार तृतीय स्थान पर रहे। 200 मीटर दौड़ (महिला वर्ग) में मीना कुमारी प्रथम, सुमिता सुन्दरम द्वितीय एवं मोंगसाइ एल तृतीय स्थान पर रही। 200 मीटर दौड़ (पुरूष वर्ग) में टिनुवापंग वालिंग प्रथम, चाला गौरी शंकर द्वितीय एवं जी हुमंतराया तृतीय स्थान पर रहे।

गोला फेंक (महिला वर्ग) में चोड़लोई होइडाईचिङ प्रथम, इम्वापांगला एल इमसोंग द्वितीय एवं केंसीले थोंग तृतीय स्थान पर रहीं। गोला फेंक (पुरूष वर्ग) में किरंगबे प्रथम, स्वागत कुमार महंत द्वितीय व होशिका वाई तृतीय स्थान पर रहे। भाला फेंक (महिला वर्ग) में ओंगपेन फोम प्रथम, लिप्साला द्वितीय एवं त्युखुम्ला चिम्युंगर तृतीय स्थान पर रहीं। भाला फेंक (पुरूष वर्ग) में स्वागत कुमार महंत प्रथम, परमपुई द्वितीय एवं आतोका तृतीय स्थान पर रहे।

वॉलीबॉल (महिला वर्ग) में प्रथम स्थान समूह-05 में प्रवीण प्रथम वर्ष की ओंगपेन फोम, केसींले थोंग, वेसाखोलु वेरो, इलिका ई. वोरसा, बेन्दांगमेनला, इरंगहुंगन्हाई विजेता रहीं एवं द्वितीय स्थान पर समूह-01 प्रवीण द्वितीय वर्ष की पुलोतोली किन्नी, लोवी येप्थोमी, तेइरियाइले लेइगीसे, ङरूइथूई रगुई, केखेलेन्यो रूप्सा, केलेविन्यो थुफ्रे उपविजेता रहीं। वॉलीबॉल (पुरूष वर्ग) में समूह 01 में स्वागत कुमार महंत, किरन, गौरी शंकर, श्रवण, दयानिधि, रजनी, विश्म्बर, लोकनाथ विजेता रहे और समूह 03 में जमीरूल्ला, जमीर हनुमंतराय, ध्रुव ज्योति, पुकार, पिनु, आकाश उपविजेता रहे।

लम्बी कूद (महिला वर्ग) में त्युखुम्ला चिम्युंगर प्रथम, केलेविनो द्वितीय एवं जानकी तृतीय स्थान पर रहीं। लम्बी कूद (पुरूष वर्ग) में स्वागत कुमार महंत प्रथम, लुईहिंग द्वितीय एवं जी. हनुमंताराय तृतीय स्थान पर रहे।

ऊँची कूद (महिला वर्ग) में सी. चुमई प्रथम, लानुतुला द्वितीय एवं तेईरियायीले और लिली लोथा तृतीय स्थान पर रहीं। ऊँची कूद (पुरूष वर्ग) में जोशेहू प्रथम, जी. हनुमंतराया द्वितीय एवं लामतिनसेई लूनकिम तृतीय स्थान पर रहे।

समापन समारोह में संचालन डॉ. तस्मीना हुसैन एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. ऊषा शर्मा ने दिया। कार्यक्रम में शैक्षिक समन्वयक प्रो. हरि शंकर, प्रशासनिक अधिकारी विनय कुमार सिंह, कुलसचिव डॉ. चंद्रकांत त्रिपाठी, डॉ. मुनीशा शर्मा, पूर्वोत्तर सामग्री निर्माण विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. मीनाक्षी दुबे, अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. सपना गुप्ता, सूचना भाषा प्रौद्योगिकी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. मयंक त्रिपाठी, परियोजना विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. शिल्पी कुमारी, डॉ. अंकुश औंधकर, डॉ. भास्कर कृष्णाजी दुबे, डॉ. राजश्री, डॉ. प्रणीता मिश्रा, डॉ. सरोज राय, डॉ. सुनीता शर्मा, डॉ. नीलम मिश्रा, श्री अरविंद शुक्ला एवं संस्थान के सभी शैक्षिक एवं प्रशासनिक सदस्य उपस्थित रहे।

कार्यशालाएँ आयोजित

कन्नड़ हिंदी पर्यायवाची शब्दकोश निर्माण संबंधी तृतीय कार्यशाला दिनांक 09.01.2025 से 13.01.2025 तक संस्थान के मैसूर केंद्र में विषय विशेषज्ञों के साथ आयोजित की गई। इस कार्यशाला में. प्रो. टी. आर. भट्ट, सेवानिवृत्त प्रो. एवं विभागाध्यक्ष, कर्नाटक विश्वविद्यालय धारवाद, डॉ. श्रीधर हेंगते. हिंदी विभाग, फील्ड मार्शल, के. एम करियप्पा कॉलेज, मैगलूर विश्वविद्यालय, मदिकेरी, कोडागु, कर्नाटक (विशेषज्ञ) प्रो. संदीप रणधीरकर एसोसिएट प्रोफेसर हिंदी विभाग (विशेषज्ञ) डॉ. परमेश्वर हेगडे (विशेषज्ञ) डॉ. आशा भदी, हुबली धारयात (विशेषज्ञ) ने भाग लिया।

'**बुदेली** लोक साहित्य की सामग्री का व्यवस्थापन करने हेतु द्वितीय कार्यशाला दिनांक 27.01.2025 से 28.01.2025 तक अपने कार्य क्षेत्र केयर पब्लिक स्कूल सतना (मध्य प्रदेश) में विशेषज्ञों के साथ आयोजित की गई। इस कार्यशाला में डॉ. सत्येन्द्र शर्मा, (पूर्व प्राधाचार्य) श्रीमती वन्दना अवस्थी दुबे (प्राचार्य), केयर पब्लिक, मुख्तार गंज, सतना (मध्य प्रदेश) श्री अरूण कुमार श्रीवास्तव, अनुमा किएशन, राजेन्द्रनगर सतना म. प्र. डॉ. श्रुति शर्मा, विषय विशेषज्ञा श्रीमती सुशीला दिवेद्वी, सेवानिवृत्त शिक्षिका (मध्य प्रदेश), श्रीमती ज्योत्सना, प्रभारी प्राचार्य शासकीय माध्यमिक विद्यालय खैरी, जिला छतरपुर (मध्य प्रदेश) ने भाग लिया।

आदिवासी लोक साहित्य की सामग्री चयन, सकलन, व्यवस्थापन करने हेतु प्रथम कार्यशाला दिनांक 29.01.2025 से 30.01.2025 तक अपने कार्यक्षेत्र लोकनेते माणिकराव गावीत महाविद्यालय विसरवादी कानपुर जिलावार महाराष्ट्र में निम्नलिखित विद्वानों/ विशेषज्ञों के साथ आयोजित की गई। कार्यशाला में ही जयश्री गावित, महाराष्ट्र (हिंदी संपादक), प्रो. पुष्पा गावित (भाषा संपादक), जी शिणाजी राठोड, ही लता गावित, डॉ. नंदा गावित्राः योगेश रघुवंशी, प्रो. अनिल गावित ने भाग लिया।

साहित्यिक प्रतियोगिता संपन्न

दिनांक 31.01.25 शुक्रवार को केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के अटल बिहारी वाजपेयी अंतरराष्ट्रीय सभागार में अध्यापक शिक्षा विभाग (सत्र 2024-25) की दो दिवसीय वार्षिक प्रतियोगिताओं का उद्घाटन संस्थान के कुलसचिव, डॉ. चंद्रकांत त्रिपाठी के सानिध्य में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि शैक्षिक समन्वयक, प्रो. हरिशंकर रहे। प्रतियोगिता के अंतर्गत वाद-विवाद प्रतियोगिता दो भागों में आयोजित की गयी, वरिष्ठ वर्ग और कनिष्ठ वर्ग। वरिष्ठ वर्ग की वाद-विवाद प्रतियोगिता का शीर्षक भारत बनाम इंडिया एवं कनिष्ठ वर्ग की वाद-विवाद प्रतियोगिता का शीर्षक ऑनलाइन एवं ऑफलाइन शिक्षा रहा जिसमें प्रतिभागियों ने पक्ष एवं विपक्ष पर अपने विचार प्रस्तुत किए। वाद-विवाद प्रतियोगिता के निर्णायक के रूप में पूर्वोत्तर शिक्षण विभाग की डॉ. मीनाक्षी दुबे एवं अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग की सह-अध्यापिका डॉ. रेणु चौधरी उपस्थित रहीं। प्रतियोगिताओं के परिणाम इस प्रकार रहे।

वाद विवाद **प्रतियोगिता** (वरिष्ठ वर्ग) **पुकार छेत्री** (प्रथम), **पंकज ठाकुर** (द्वितीय), **झलक, गुंजन** और **प्रॉमिस** (तृतीय)
वाद विवाद **प्रतियोगिता** (कनिष्ठ वर्ग) **उदय शाह**, (प्रथम), **केलेबिनो**, (द्वितीय) **इनाली** (तृतीय)
कविता पाठ **दीपा मिश्रा**, (प्रथम) **पुकार क्षेत्री**, **प्रॉमिस** (द्वितीय), **धर्मराज** (तृतीय)
भाषण प्रतियोगिता **रोमाली** (प्रथम), **दीपा** और **मुन्ना साहनी**, (द्वितीय) **झलक कुमार** (तृतीय)
कहानी कथन **गुंजन** (प्रथम), **पवार** और **पंकज** (द्वितीय), **पुकार क्षेत्री** (तृतीय)
क्विज तेरहवां समूह (प्रथम), पांचवा समूह (द्वितीय) और दूसरा समूह (तृतीय)

संपादकीय

जन-गण-मन का मान बढ़ाती हिंदी

हर नया वर्ष नए संकल्प, नए स्वप्न और नए सृजन का उत्साह लेकर आने का ही साक्षी पर्व है। वर्ष 2025 का पहला महीना जनवरी जिसकी उँगली थाम कर हम आगे के 12 महीनों की सैर करेंगे, उसमें ढेर सारे सपनों को साकार करने की सफल चेष्टाएँ होंगी। हमारी कोशिशों में कर्मण्यता हो, रचनात्मक दृष्टि हो और पौरुष से भरपूर जिजीविषा हो तो आशाओं को उपलब्धि के दमकते भव्य शिल्प में ढाला जा सकता है। वर्ष के इस पहले महीने में केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा 'गणतंत्र दिवस' और 'विश्व हिंदी दिवस' का उल्लासपूर्ण आयोजन किया गया। 76वें गणतंत्र दिवस के मौके पर प्रभात फेरी, झंडारोहण, विभिन्न साहित्यिक-सांस्कृतिक तथा खेल प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। संविधान में वर्णित मौलिक कर्तव्यों को जीवन में उतारने की बात को प्रमुखता से रेखांकित किया गया। इसी तरह विश्व हिंदी दिवस पर संस्थान की अगुवाई में अनेक कार्यक्रम आयोजित कर वैश्विक होती हिंदी को और अधिक गति देने की नीति पर सार्थक परिचर्चाएँ हुईं। मालूम हो कि आजाद भारत में 26 जनवरी 1950 को संविधान लागू कर देश को गणतंत्र घोषित किया गया था, तब से देश के नागरिक इसे राष्ट्रीय त्योहार के रूप में मनाते रहे हैं वहीं दुनियाभर में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के लिए हर साल दस जनवरी को विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया जाता है। दस जनवरी का दिन इसलिए चुना गया है कि 1975 में इसी दिन नागपुर में पहली बार विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया था, जिसमें 30 देशों के 122 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया था।

हिंदी विश्व में बोली जाने वाली चौथी बड़ी भाषा है। भारत की करीब 60 प्रतिशत से ज्यादा आबादी हिंदी बोलती और समझती है। भारत से बाहर मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, गुयाना, त्रिनिदाद और टोबैगो में भी हिंदी बड़े पैमाने पर बोली जाती है।

आजादी के आंदोलन के दौरान अंग्रेजों के खिलाफ पूरे देश को एकजुट करने में हिंदी की भूमिका काफी महत्वपूर्ण रही। संविधान सभा में लंबी बहस के बाद इसे राजभाषा के रूप में अपनाया गया। साथ ही,हिंदी को अखिल भारतीय स्वरूप प्रदान करने तथा जन-जन को जोड़ने और वैश्विक धरातल पर प्रतिष्ठित करने के लिए 'केंद्रीय हिंदी संस्थान' तथा 'केंद्रीय हिंदी निदेशालय' की स्थापना की गई। हालांकि सरकारी और संस्थागत प्रयासों की वजह से वर्ष 2014 के बाद भारत और दुनिया में हिंदी को लेकर लोग संजीदा हुए हैं। बावजूद इसके हिंदी अभी तक राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं पा सकी है। हिंदी के पक्ष में तमाम तर्कों के बावजूद कटु सत्य यह है कि हिंदी का रोजगार से न जुड़ पाना, भूमंडलीकरण के दौर में चुनौतियों का सामना न कर पाना, हिंदी और हिंदी भाषियों के लिए मुश्किलें पैदा कर रहा है। दरअसल हिंदी को दोतरफा प्रतिस्पर्धा झेलनी पड़ रही है। वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा तो है ही, हिंदी को देश में भी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है। जमा तलाशी, फौजदारी, दरियाफ्त, मौजा, हुकम, हिकमत, अमली, मुखबिर, मजमून, फिकरा, तहरीर, शहादत... आदि अनेक ऐसे शब्द हैं जिसे भारतके ज्यादातर व्यक्ति जानते है, और जीवन में कभी न कभी पुलिस थानों और कचहरी में उनका पाला भी इनसे पड़ता है।

यह जरूरी नहीं है कि इन शब्दों को हटा दिया जाए या खत्म कर दिया जाए। लेकिन इनके साथ हिंदी के वैकल्पिक शब्दों के प्रयोग पर भी तो जोर दिया जा सकता है, ताकि इनके साथ-साथ इनके समानार्थक हिंदी के शब्दों को भी लोग जान पाएँ। दरअसल, हिंदी अनुवाद की नहीं संवाद की भाषा है। ये भी सही है कि समय के साथ-साथ हिंदी पहले के मुकाबले बहुत बदल गई है। एक ज़माने में जिस तरह की हिंदी बोली, और लिखी जाती थी वो अब चलन से बाहर हो गई है। जरूरत के हिसाब से, इसमें कई बदलाव आए हैं।

भाषा वैज्ञानिकों के मुताबिक हिंदी साहित्य का इतिहास वैदिक काल से आरम्भ होता है। कभी 'वैदिक', कभी 'संस्कृत', कभी 'प्राकृत', कभी 'अपभ्रंश' और अब हिंदी। अतः हजारों साल का इतिहास खुद में समेटे हिंदी की राह चुनौतियों के साथ ही बेहद ही गौरवशाली और ऐतिहासिक रही है।

आज़ादी के बाद नकल की नीति के कारण हिंदी का प्रचार-प्रसार धीरे-धीरे कम होने लगा और हिंदी बोलचाल के साथ ही साहित्यिक रूप से भी सिमटने लगी। हिंदी की इस स्थिति को देखते हुए ही 70 के दशक से हिंदी के प्रचार-प्रसार को लेकर बहस मुबाहिसों का दौर चल रहा है।शायद यह अकेली ऐसी भाषा है, जिसके लिए अलग राजभाषा विभाग और विश्व हिंदी सम्मेलनों जैसी कवायदें चल रही हैं। अब ये समझ मजबूत हुई है कि हिंदी को अगर जेब और भविष्य से जोड़ दिया जाए, तो ये अपने आप लोगों के दिल से जुड़ जाएगी।

भाषा वही जीवित रहती है जिसका प्रयोग जनता करती हो। भारत में लोगों के बीच संवाद का सबसे बेहतर माध्यम हिंदी है। इसलिए इसे ज्यादा से ज्यादा एक-दूसरे में प्रचारित करने की जरूरत है। अपने बोलचाल में हिंदी के उपयोग की जरूरत है ताकि उसकी जीवंतता और उपयोगिता बनी रहे। विश्व हिंदी दिवस का यही निहितार्थ है और केंद्रीय हिंदी संस्थान का संकल्प भी।

प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी
निदेशक

राष्ट्रीय शिक्षा नीति एनईपी 2020 में

भाषाई विविधता को बचाने पर बल: प्रो. कुळकर्णी

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 ने मातृभाषा और क्षेत्रीय भाषाओं को शिक्षा के प्रारंभिक स्तर पर प्राथमिकता देकर भारत के सांस्कृतिक और भाषाई विविधता को संरक्षित करने पर बल दिया है। हिंदी भाषा न केवल हमारी सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है, बल्कि यह देश के विभिन्न भागों को एक सूत्र में पिरोने का माध्यम भी है। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भी विकसित भारत/2047 को लक्षित करते हुए भाषा के स्तर पर आगे बढ़ने का आह्वान किया है।

उक्त बातें केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने भाषा संचेतना शिविर की अध्यक्षता करते हुए कही। मालूम हो कि केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र द्वारा अंडमान-निकोबार द्वीप समूह के डाएट के प्रशिक्षणार्थियों के प्रशिक्षण के लिए दि. 06.01.2025 से 18.01.2025 तक डाइट, गाराचरमा, दक्षिण अंडमान, पोर्टब्लेयर में 13वाँ हिंदी भाषा संचेतना शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर का उद्घाटन समारोह दि. 07.01.2025 को पूर्वाह्न 10.30 बजे डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाएट), गाराचरमा, पोर्टब्लेयर में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती संगीता चंद, प्रधानाचार्य, राज्य शिक्षा संस्थान (एसआईई), अंडमान-निकोबार एवं सम्मानित अतिथि के रूप में श्रीमती अर्चना सिंह, प्राचार्य, सरकारी बालिका माध्यमिक विद्यालय, अंडमान-निकोबार उपस्थित थे। मंच पर इस कार्यक्रम के संयोजक प्रो. गंगाधर वानोडे, क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र उपस्थित थे। इस शिविर में डाएट गाराचरमा के 62 तथा टैगोर राजकीय शिक्षा महाविद्यालय के 14 छात्र अध्यापक-कुल 76 (पुरुष-8, महिला-68) छात्र अध्यापकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने हिंदी भाषा संचेतना शिविर के मुख्य उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए कहा कि भाषा विज्ञान, भाषा साहित्य और भाषा में तकनीकी का क्रियान्वयन महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि भाषा जीवन विकास के लिए महत्वपूर्ण है। राज्य, राष्ट्र, अंतरराष्ट्रीय भाषा का ज्ञान होना जरूरी है। शिक्षा के माध्यम से नया ज्ञान प्राप्त करना और ज्ञान से अर्थार्जन प्राप्त करना मूल उद्देश्य होता है। भाषा का ज्ञान और विकास इस शिविर के माध्यम से होना चाहिए। हिंदी भाषा विकास के लिए हर विद्यार्थी को हिंदी भाषा में लेखन, वाचन, संभाषण आदि प्रमाणित करना जरूरी है। सकारात्मक दृष्टिकोण से जीवन में सफलता प्राप्त होती है।

सम्मानित अतिथि श्रीमती अर्चना सिंह ने कहा कि हिंदी हमारी बोलचाल की भाषा है। हिंदी को बढ़ावा देने के लिए केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा आयोजित हिंदी भाषा संचेतना शिविर एक उत्कृष्ट कार्यक्रम है।

मुख्य अतिथि श्रीमती संगीता चंद ने कहा कि हिंदी भाषा एक राष्ट्रीय भाषा है। उसे बोलचाल की भाषा से मानक (प्रमाणित) भाषा में विकसित करना जरूरी है। आजकल के बच्चे हिंदी लिखना नहीं चाहते। आज की हिंदी वॉटसअप हिंदी हो गई है। बच्चों को हिंदी भाषा की वर्तनी सीखनी चाहिए।

कार्यक्रम के संयोजक प्रो. गंगाधर वानोडे ने अपने वक्तव्य में कहा कि नई शिक्षा नीति 2020 का क्रियान्वयन करते हुए हिंदी लेखन, वाचन, भाषण आदि कौशल का विकास होना जरूरी है। उन्होंने सभी विद्यार्थियों को इस शिविर में उत्साहपूर्वक भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

शिविर के जरिए हासिल होता भाषाई कौशल

दिनांक 18 जनवरी 2025 को 13वें हिंदी भाषा संचेतना शिविर का समापन समारोह डाएट, गाराचरमा, श्री विजयपुरम (पोर्टब्लेयर) में आयोजित किया गया। समापन समारोह की अध्यक्षता ऑनलाइन के माध्यम से प्रो. सुनील कुळकर्णी, निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा ने की। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. मंजु लता राव, प्राचार्य, टैगोर राजकीय शिक्षा महाविद्यालय तथा सम्मानित अतिथि के रूप में श्रीमती संगीत चंद, प्राचार्य, राज्य शिक्षा संस्थान, विजयपुरम उपस्थित थीं। पाठ्यक्रम के संयोजक, प्रो. गंगाधर वानोडे, क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (हैदराबाद केंद्र) तथा सह आचार्य डॉ. अंकुश औंधकर, डॉ. सरस्वती देवी तथा डॉ. राम कृपाल तिवारी उपस्थित थे। इस शिविर के माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा नीति के परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान परंपरा, भारतीय शिक्षा का उद्भव, भाषिक संप्रेषण, भाषा परिमार्जन, सृजनात्मक लेखन, विभिन्न शिक्षण विधियों का अनुप्रयोग करते हुए भाषा कौशलों का विकास छात्रों में किया गया।

अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. कुळकर्णी ने कहा कि हिंदी भाषा संचेतना शिविर के माध्यम से छात्रों में हिंदी के प्रति जागरूकता निर्माण की जा सकती है। साथ ही विद्यार्थियों के भाषिक कौशल गुणों का विकास किया जा सकता है। और भी इस तरह के शिविर संस्थान की ओर से अंडमान-निकोबार में आयोजित किए जा सकते हैं। इसी तरह हिंदी अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए नवीकरण पाठ्यक्रम भी अंडमान निकोबार प्रशासन के सहयोग से आयोजित किए जा सकते हैं।

मुख्य अतिथि डॉ. मंजुलता राव ने अपने वक्तव्य में कहा कि विद्यार्थियों ने जो प्रतिवेदन प्रस्तुत किया उससे पता चलता है कि इस शिविर के माध्यम से विद्यार्थियों में हिंदी भाषा कौशल से संबंधित ज्ञान अर्जित किया है और विद्यार्थियों ने इस ज्ञान का अनुप्रयोग अपने अध्यापन कार्य में करना चाहिए।

सम्मानित अतिथि ग्रं. संगीता चंद ने कहा है कि वे विद्यार्थियों द्वारा दी गई प्रस्तुतियों से प्रभावित हुई। चित्र प्रदर्शनी देखने के बाद उन्हें लगा कि इस तरह के हिंदी भाषा संचेतना शिविर के माध्यम से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो सकता है। इन्होंने आश्वासन दिया कि वे हिंदी अध्यापकों के लिए भी भविष्य में इस प्रकार के शिविर तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम केंद्रीय हिंदी संस्थान के माध्यम से आयोजित करेंगे। कार्यक्रम के संयोजक प्रो. वानोडे ने कहा कि विद्यार्थियों को उच्चारण तथा लेखन पर अधिक परिश्रम करना चाहिए। अभिव्यक्त होने के लिए ध्यान पूर्वक सुनना चाहिए। इस शिविर के माध्यम से जो ज्ञान प्राप्त किया उसका उपयोग अध्यापन शैली में करना चाहिए।

शिविर के दौरान विद्यार्थियों द्वारा तैयार हस्तलिखित पत्रिका लघु भारत अंडमान निकोबार का लोकार्पण तथा पर परीक्षण में स्थान प्राप्त उम्मीदवारों

लोकार्पण

दिनांक 19 जनवरी, 2025 को काबिनी क्लब एवं केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में डॉ. मोहिनी गुप्ता के प्रथम काव्य-संग्रह 'प्रेम के मोती' का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम में केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे, विशिष्ट अतिथि के रूप में भाग लिया। इस अवसर केंद्र के सदस्य श्री सजग तिवारी एवं अन्य सदस्य उपस्थित थे।

शिक्षा सचिव से भेंट

डाएट, गाराचरमा, श्री विजयपुरम (पोर्टब्लेयर) में आयोजित 13वें 'हिंदी भाषा संचेतना शिविर के दौरान केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे के साथ पोर्टब्लेयर में शिक्षा सचिव तथा राज्य शिक्षा संस्थान के प्राचार्य से भेंट कर भविष्य में पोर्टब्लेयर के माध्यमिक हिंदी अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए नवीकरण पाठ्यक्रम आयोजित करने के संबंध में चर्चा की।

'हिंदी का वैश्विक परिप्रेक्ष्य' विषय पर संगोष्ठी

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, संत जेवियर कॉलेज (सशक्त स्वायत्त संस्थान), मुंबई, भारतीय वैश्विक परिषद, नई दिल्ली एवं यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, मुंबई के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 20 एवं 21 जनवरी 2025 को दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी 'हिंदी का वैश्विक परिदृश्य' विषय पर आयोजित की गई। इस अंतरराष्ट्रीय आयोजन में डॉ. अलका धनपत, महात्मा गांधी संस्थान, (मॉरीशस से डॉ. रतन सिंह, मॉस्को, रूस) से, सुश्री लिनिया खोवायेवा, (मॉस्को, रूस) से एवं डॉ. शिरीन कुरैशी, पूर्व हिंदी चेयर, (कोलंबो, श्रीलंका) से शामिल हुए, साथ ही भारत के विभिन्न राज्य जैसे गोवा, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, गुजरात, राजस्थान, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, केरल, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश आदि राज्यों से भी विविध विषयों के विद्वान उपस्थित रहे। इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में उद्घाटन एवं समापन सत्र सहित कुल छः सत्रों का आयोजन किया गया।

279वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम आयोजित

ईटानगर में शीघ्र खुलेगा संस्थान का क्षेत्रीय केंद्र

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के गुवाहाटी केंद्र द्वारा अरुणाचल प्रदेश राज्य के लोहित जिले के सेवारत हिंदी अध्यापकों के लिए बी.आर.सी.हॉल, तेजू, जिला-लोहित, अरुणाचल प्रदेश में दिनांक 21.01.2025 से 31.01.2025 तक 279वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इस पाठ्यक्रम का संयोजन डॉ. चंद्रशेखर चौबे, क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, गुवाहाटी केंद्र द्वारा किया गया।

उद्घाटन समारोह में सर्वप्रथम प्रतिभागी अध्यापिकाओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। तत्पश्चात डॉ. चंद्रशेखर चौबे, (क्षेत्रीय निदेशक), ने स्वागत वक्तव्य देते हुए पाठ्यक्रम का परिचय प्रस्तुत किया। ऑनलाइन माध्यम से जुड़े इस कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, (निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा) ने अपने वक्तव्य में प्रशिक्षणार्थियों को इस नवीकरण पाठ्यक्रम की आवश्यकता से अवगत कराते हुए हिंदी भाषा के शुद्ध प्रयोग सीखने के लिए प्रशिक्षणार्थियों को प्रोत्साहित किया। प्रो. कुळकर्णी अरुणाचल प्रदेश में हिंदी की बेहतर स्थिति की सराहना करते हुए ईटानगर में शीघ्र ही संस्थान का क्षेत्रीय केंद्र खोलने हेतु किये जा रहे प्रयासों से सभी को अवगत कराया। मुख्य अतिथि श्री सोतिनसो पूल, ब्लॉक एजुकेशन ऑफिसर, तेजू ने इस पाठ्यक्रम में प्रतिनियुक्त सभी अध्यापकों को नियमित रूप से कक्षा में उपस्थित रहकर हिंदी अध्यापन में कुशलता अर्जन करने का आह्वान किया। पाठ्यक्रम के उद्घाटन समारोह का संचालन श्रीमती सलमा बेगम ने किया जबकि डॉ. दिनेश साहू ने सभी का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ किया गया।

पाठ्यक्रम के प्रथम दिन प्रशिक्षणार्थियों के व्यवहारिक भाषायी ज्ञान को जानने के उद्देश्य से पूर्व परीक्षण लिया गया। इस पाठ्यक्रम में 34 छात्रों ने नामांकन लिया जिनमें 08 (आठ) पुरुष, एवं 26 (छब्बीस) महिलाएँ सम्मिलित थीं। इस पाठ्यक्रम में डॉ. चंद्रशेखर चौबे, क्षेत्रीय निदेशक, गुवाहाटी केंद्र ने हिंदी व्याकरण एवं अभ्यास, पाठ्येतर गतिविधियाँ, डॉ. दिनेश साहू, सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक ने मानक हिंदी भाषाएँ एवं सामान्य भाषा विज्ञान तथा हिंदी साहित्य, श्रीमती सलमा बेगम, कस्तूरबा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ हायर एजुकेशन, केबाली, रोइंग ने हिंदी भाषा शिक्षण, पाठ योजना पर प्रकाश डालते हुए प्रतिभागियों को प्रशिक्षित करने का हर संभव प्रयास किया।

प्रतिभागियों ने भी इस पाठ्यक्रम को सुचारू ढंग से चलाने में सहयोग प्रदान किया। पाठ्यक्रम पूरा होने के बाद प्रशिक्षणार्थियों का पर परीक्षण लिया गया।

नवीकरण पाठ्यक्रम का समापन समारोह दिनांक 31.01.2025 को आयोजित किया गया। इस समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्री सोतिनसो पूल, बी.ई.ओ., तेजू उपस्थित थे। प्रशिक्षणार्थियों ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि समेत सभी अध्यापकों को परंपरागत वस्त्र एवं थैला भेंटकर उनका स्वागत किया। प्रतिभागी अध्यापिकाओं ने तत्पश्चात मधुर स्वर में स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

प्रतिभागी अध्यापिका लक्कीलू यून ने दस दिनों तक चलनेवाले इस 279वें नवीकरण कार्यक्रम की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत किया।

इसके पश्चात् प्रशिक्षणार्थियों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी। सांस्कृतिक कार्यक्रम के पश्चात् नवीकरण के दौरान नियमित रूप से उपस्थित रहकर प्रशिक्षण पूरा करने वाले 34 प्रतिभागी शिक्षकों के साथ-साथ पर परीक्षण में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करनेवाले प्रतिभागी शिक्षकों को मुख्य अतिथि द्वारा प्रमाण पत्र और संस्थान की ओर से संस्थान प्रकाशित पुस्तकें उपहार के रूप में प्रदान की गई।

डॉ. चंद्रशेखर चौबे, क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, गुवाहाटी केंद्र ने इस नवीकरण पाठ्यक्रम के सभी प्रतिभागी प्रशिक्षणार्थी अध्यापकों को शुभकामना संदेश दिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सोतिनसो पूल, बी.ई.ओ., तेजू ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। अंत में प्रतिभागी अध्यापक श्री दीपक कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ किया गया।

भुवनेश्वर

मानक हिंदी भाषा के प्रयोग को प्रोत्साहन

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) के क्षेत्रीय केंद्र-भुवनेश्वर द्वारा ओड़िशा राज्य के संबलपुर जिले के हिंदी शिक्षकों के लिए दि. 06.01.2025 से 17.01.2025 तक 151 वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम जिला सी.एस. बी. जिला स्कूल, संबलपुर में आयोजित किया गया। इसमें कुल 62 (35 महिला व 27 पुरूष) प्रतिभागी सम्मिलित हुए। नवीकरण कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान, भुवनेश्वर केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक एवं पाठ्यक्रम संयोजक डॉ. रंजन कुमार दास ने की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती जयश्री दोरा (सहायक जिला शिक्षा अधिकारी, संबलपुर), श्रीमती लोकिता दाश (प्रधानशिक्षिका, सी.एस.बी. जिला स्कूल, संबलपुर), डॉ. चंद्र प्रताप सिंह (विषय विशेषज्ञ), डॉ. अरविन्द तिवारी (अतिथि प्रवक्ता, केंद्रीय हिंदी संस्थान, भुवनेश्वर केंद्र) एवं संबलपुर जिले के हिंदी शिक्षक उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में क्षेत्रीय निदेशक डॉ. रंजन कुमार दास ने अपने उद्बोधन में पाठ्यक्रम व संस्थान का परिचय देते हुए अध्यक्षीय टिप्पणी प्रस्तुत की एवं हिंदी भाषा के महत्त्व पर प्रकाश डाला। संबलपुर जिले के हिंदी शिक्षकों ने नवीकरण के आयोजन हेतु संस्थान का आभार व्यक्त किया। मंच संचालन मोहम्मद मिर्जा जहिरूद्दीन (हिंदी शिक्षक, संबलपुर जिला) द्वारा किया गया।

दिनांक 17.01.2025 को आयोजित नवीकरण कार्यक्रम के समापन समारोह की अध्यक्षता क्षेत्रीय निदेशक डॉ. रंजन कुमार दास ने की। मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित श्रीमती लोकिता दाश (प्रधान शिक्षिका, सी. एस. बी. जिला स्कूल, संबलपुर), डॉ. चंद्र प्रताप सिंह (विषय विशेषज्ञ) एवं डॉ. अरविन्द तिवारी (अतिथि प्रवक्ता, केंद्रीय हिंदी संस्थान, भुवनेश्वर केंद्र) समापन समारोह में उपस्थित रहे। नवीकरण कार्यक्रम में प्रतिभागियों ने

151 वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम

नवीकरण से संबंधित अपने अनुभवों को व्यक्त किया। इस 12 दिवसीय नवीकरण कार्यक्रम में अध्यापन कार्य डॉ. रंजन कुमार दास (क्षे.नि.), डॉ. चंद्रप्रताप सिंह (विषय विशेषज्ञ) तथा डॉ. अरविन्द तिवारी (अतिथि प्रवक्ता) द्वारा किया गया। संबलपुर के हिंदी शिक्षकों की रचनाओं का प्रकाशन हस्तलिखित पत्रिका के रूप में किया गया। पत्रिक का विमोचन मंचासीन अतिथियों द्वारा किया गया। मंच संचालन श्री प्रशांत कुमार खमारी (हिंदी शिक्षक, संबलपुर जिला) द्वारा किया गया। इस नवीकरण में विवेकानंद विश्वकर्मा (लिपिक, अनु.) तथा संतोष कुमार रणा, MTS (अनु.) द्वारा प्रतिभागियों के लिए पंजीकरण फॉर्म, प्रमाण-पत्र एवं निवृत्ति प्रमाण-पत्र, TA/DA फॉर्म, पुस्तकों की बिक्री तथा अल्पाहार की व्यवस्था की गई।

182वाँ हिंदी शिक्षक नवीकरण पाठ्यक्रम

72 हिंदी शिक्षकों ने लिया हिस्सा

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के क्षेत्रीय केंद्र, शिलांग द्वारा मिजोरम राज्य के लाई स्वायत्तजिला परिषद, लोङत्लाइ , मिजोरम के हिंदी शिक्षकों के लिए 182वाँ हिंदी शिक्षक नवीकरण पाठ्यक्रम दिनांक 20.01.2025 से 01.02.2025 तक लोङत्लाइ , मिजोरम में आयोजित किया गया। उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रुप में श्री ललम्हाछुआना, प्राथमिक शिक्षा अधिकारी (मिडिल स्कूल) लाई स्वायत्त जिला परिषद, लोङत्लाइ, मिजोरम उपस्थित रहे। केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय ने अंगवस्त्रम, मिज़ो शब्द कोश एवं समन्वय पूर्वोत्तर पत्रिका से मुख्य अतिथि तथा अन्य सभी अतिथियों का स्वागत किया।

इस पाठ्यक्रम में लाई स्वायत्त जिला परिषद, लोङत्लाइ के विभिन्न विद्यालयों के लगभग 78 हिंदी शिक्षक प्रतिभागियों की प्रतिनियुक्ति की गई थी। नवीकरण में कुल 72 प्रतिभागियों ने भाग लिया। जिसमें 48 महिला तथा 24 पुरुष थे।

182 वें नवीकरण पाठ्यक्रम के संयोजक केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय ने अपने व्याख्यान में केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग केंद्र में संचालित हो रहे शैक्षिक गतिविधियों के कार्यों के बारे में अवगत कराया। इस नवीकरण पाठ्यक्रम में अध्यापन कार्य केंद्रीय हिंदी संस्थान के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय, सहायक प्रोफेसर डॉ. मयंक तथा अतिथि अध्यापक डॉ. वी. आर. राल्ते और श्रीमान डेविड के. आज्यू, ने किया। नवीकरण पाठ्यक्रम में प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को विभिन्न विषयों का अध्यापन कार्य किया जैसे- राष्ट्रीय शिक्षा नीति, भारतीय ज्ञान परंपरा, सूक्ष्म शिक्षण, शिक्षा सिद्धांत, मौखिक कौशल, पाठ्य पुस्तक विश्लेषण, भाषा विज्ञान तथा उसके विविध पक्ष, भाषा प्रौद्योगिकी एवं कंप्यूटर, हिंदी व्याकरण, भाषा परिमार्जन, भाषा शिक्षण, भाषा कौशल, प्रयोजन मूलक हिंदी, साहित्य शिक्षण, हिंदी साहित्य, सृजनात्मक लेखन, लेखन कौशल, हिंदी साहित्य का इतिहास, हिंदी भाषा का इतिहास, अनुवाद, कंप्यूटर आदि पर प्रशिक्षण दिया गया दिनांक 01.02.205 को 182 वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम का समापन समारोह का अयोजन किया गया। समापन समारोह मुख्य अतिथि के रुप में श्री थनसियामा, डिप्टी सेक्रेटरी, लाई स्वायत्तजिला परिषद, लोङत्लाइ, मिजोरम उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन श्री एलेक्स ललजोमपुइआ ने किया।

इस कार्यक्रम में कई प्रतिभागियों ने नवीकरण पाठ्यक्रम हेतु प्रतिक्रिया व्यक्त की। इसके उपरांत आदरणीय मंच द्वारा प्रतिभागियों को नवीकरण पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक पूर्ण करने पर प्रमाण-पत्र दिए गए।

साथ ही पर–परीक्षण में प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को भी उत्साहवर्धन हेतु प्रमाण-पत्र दिए गए। अंत में राष्ट्रगान द्वारा नवीकरण कार्यक्रम का समापन किया गया।

मैसूर केंद्र

मैसूर सौरभ का विमोचन

नवीकरण कार्यक्रम के प्रतिभागियों द्वारा तैयार की गई हस्तलिखित पत्रिका 'मैसूर सौरभ' का विमोचन किया गया। इसके बाद प्रतिभागियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

श्रद्धालुओं को श्रद्धांजलि

सत्र के अंतर्गत मौनी अमावस्या के दिन दिनांक-29.01.2025 को प्रयागराज कुम्भ मेले में भगदड के दौरान मरे हुए श्रद्धालुओं को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए एक मिनट का मौन रखा गया। कार्यक्रम के आयोजन में मैसूर केंद्र के सभी कर्मियों श्री लक्ष्मीनारायन, श्री राघवेंद्र, श्रीमती पदमा एवं चेन्ने गोडा आदि ने अपना सहयोग दिया।

पृष्ठ 1 का शेष...

संस्थान के भुवनेश्वर केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक एवं समस्त शैक्षिक एवं प्रशासनिक सदस्य, सरकारी बालक उच्च विद्यालय के विद्यार्थियों, प्रधान शिक्षिका व शिक्षकगण के साथ मिलकर केंद्र पर गणतंत्र दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। ध्वाजारोहण के पश्चात संयुक्त रूप से राष्ट्रगान गाया गया। कार्यक्रम के पश्चात विद्यार्थियों, आमंत्रित अतिथियों के बीच मिष्ठान का वितरण हुआ।

शिलांग केंद्र की ओर से केंद्र के कार्यालय परिसर में ध्वजारोहण हुआ। इस अवसर पर केंद्र के कर्मचारियों एवं सुरक्षा कर्मियों ने भाग लिया।

हिंदी शिक्षक नवीकरण कार्यक्रम आयोजित

केंद्रीय हिंदी संस्थान, के मैसूर केंद्र द्वारा दिनांक 17.01.2025 से 30.01.2025 तक मैसूर जिले के माध्यमिक स्तर के हिंदी शिक्षकों के लिए 296वें हिंदी शिक्षक नवीकरण कार्यक्रम का आयोजन मैसूर केंद्र पर किया गया। इस नवीकरण कार्यक्रम में मैसूर जिले के कुल 35 हिंदी शिक्षकों ने भाग लिया जिनमें 18 महिला तथा 17 पुरुष शिक्षक थे।

नवीकरण कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबूराव कुळकर्णी ने आभासी पटल के माध्यम से की। उद्द्घाटन सत्र में कार्यक्रम के संयोजक एवं मैसूर केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. योगेंद्र मिश्र, पाठ्यक्रम प्रभारी एवं मैसूर केंद्र के शैक्षिक सदस्य डॉ. रणजीत भारती, डायट मैसूर के प्रतिनिधि श्री सुरेश और नोडल ऑफिसर श्रीमती नलिनाक्षी उपस्थित थे। क्षेत्रीय निदेशक एवं अन्य सदस्यों ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की औपचारिक शुरुआत की। सत्र का संचालन केंद्र के शैक्षिक सदस्य डॉ. रणजीत भारती ने किया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो. कुळकर्णी ने नवीकरण कार्यक्रम के उपयोगिता की चर्चा की।

उद्घाटन समारोह के पश्चात् प्रतिभागी शिक्षकों का लिखित रूप में पूर्व परीक्षण लिया गया। जिसके द्वारा उनके हिंदी भाषा एवं साहित्य के ज्ञान के स्तर की जाँच की गई। पूर्व परीक्षण को ध्यान में रखते हुए कन्नड मातृभाषा-भाषी शिक्षकों द्वारा शिक्षण में हो रहीं हिंदी वर्तनी, व्याकरणिक संरचना एवं साहित्यिक व्याख्या सबंधी त्रुटियों को केंद्र में रखकर विषय विशेषज्ञों द्वारा अध्यापन कार्य एवं चर्चा-परिचर्चा की गई। डॉ. योगेंद्र मिश्र ने हिंदी साहित्य, शैक्षिक सदस्य डॉ. रणजीत भारती ने भाषाविज्ञान, बाह्य विषय विशेषज्ञ, डॉ. प्रधान गुरुदत्त हिंदी कन्नड़ की समानताओं, डॉ. विनय कुमार यादव ने हिंदी संरचना, अध्यापन किया। इस कार्यक्रम के दौरान प्रो. राजेश कुमार साहा तथा प्रो. वी. डी. हेगड़े के दो विशिष्ट व्याख्यानों का आयोजन किया गया।

दिनांक 30.01.2025 को अपराह्न 3:45 से समापन समारोह आयोजित किया गया। जिसकी अध्यक्षता संस्थान के माननीय निदेशक प्रो. सुनील बाबूराव कुळकर्णी जी ने आभासी पटल के माध्यम से की। इस सत्र में केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक, डॉ. योगेंद्र मिश्र, शैक्षिक सदस्य, डॉ. रणजीत भारती, अतिथि व्याख्याता डॉ. विनय कुमार यादव एवं नोडल ऑफिसर श्रीमती नलिनाक्षी उपस्थित थी।

सरदार पटेल विश्वविद्यालय, आनंद, गुजरात के स्नातकोत्तर हिंदी विभाग द्वारा आयोजित 'हिंदीसाहित्य में शिक्षा एवं जीवन मूल्य' विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी।

विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित विश्व हिंदी दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहकर निदेशक महोदय ने सचिव पूर्व मजूमदार जी के कर कमलों द्वारा सम्मान प्राप्त किया।

पं. विद्यानिवास मिश्र के जन्म शताब्दी समारोह के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कर रहे संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी को सम्मानित करते हुए आयोजकगण।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित विश्व हिंदी दिवस समारोह एवं कवि सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी।

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली, उच्चतर शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार तथा हिंदी भवन, विश्व भारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी तथा पूर्व छात्र सम्मेलन के उद्घाटन में निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी।

भुवनेश्वर क्षेत्रीय केंद्र पर झंडारोहण कार्यक्रम

स्पष्टीकरण

'संस्थान समाचार' माह अगस्त 2023 अंक की संपादकीय में पाठकगण को सकारात्मक प्रेरणा देने हेतु निम्न संदेशात्मक पंक्तियाँ लिखीं गईं थीं, "आशा है कि आप अगले एक डेढ़ माह में सब लोग एक नई उमंग, नई आशा और नए उत्साह के साथ संस्थान में प्रवेशित होंगे। अपेक्षा केवल इतनी है कि इस शुभ कार्य को संपन्न करने हेतु किसी दृष्टिबाधित की दृष्टि न लगे। इसलिए ईश्वर से प्रार्थना है कि यह शुभ कार्य संपन्न कराने हेतु मुझे बल और आशीर्वाद प्रदान करें।"

केंद्रीय हिंदी संस्थान में कार्यरत प्रोफेसर उमापति दीक्षित द्वारा आपत्ति की गई है कि उपरोक्त अंश उन्हें लक्षित कर लिखा गया है।

इस संबंध में यह स्पष्ट करना है कि आपत्तिकर्ता की यह धारणा उचित नहीं है। क्योंकि संस्थान समाचार बिना किसी भेदभाव के संस्थान की मासिक गतिविधियों को अपने पाठकों तक पहुँचाने का मंच है। संपादकीय का उक्त अंश किसी व्यक्ति विशेष के प्रति नही है।

यह एक सामान्य अपेक्षा के रूप में प्रयोग की गईं सामान्य पंक्तियाँ है। फिर भी यदि संपादकीय के उक्त अंश से किसी को किसी प्रकार का कष्ट पहुँचा है, तो हम खेद प्रकट करते हैं।

संपादक, संस्थान समाचार

अर्थांतर...

'लालची' और 'लोभी'

'लल्' माने 'इच्छा करना' और 'जीभ लपलपाना'। इस धातु से बने 'लाला' माने 'लार'। 'लालायित' के शाब्दिक माने 'लार टपकाता हुआ, जिस के मुँह में अधिक लालच के कारण लार आ गई हो'।

'लालच' की जड़ 'लालसा' में है, जिस की धातु 'लस्' (प्रकाश में आना; उगना) है। 'लालसा' का मतलब 'प्रबल इच्छा' है और 'लालस' का मतलब 'अत्यंत लालायित' है। 'लालच' का व्याख्यात्मक अर्थ है 'कुछ पाने की इतनी बढ़ी हुई इच्छा कि लोग उसे अनुचित और अशोभनीय मानते हों'।

'लालची' को 'लोभी' कह कर समझा दिया जाता है, जिस में 'लोभ करना' अर्थवाली 'लुभ्' धातु है। 'लोभ' का चुस्त व्याख्यात्मक अर्थ है 'दूसरे की चीज़ को पाने की ऐसी लालसा, जिस की पूर्ति हो जाने पर भी अतृप्ति शेष रहे'।

यद्यपि 'लालची' को गंदा माना जाता है, पर उसे जल्दी संतुष्ट किया जा सकता है। इस के विपरीत, यद्यपि 'लोभी' की नीयत स्थायी रूप से खराब रहती है, पर उस से संबंधित संस्कृत के 'लुब्ध' तथा हिंदी के 'लुभाना' और 'लुभावना' के आधार पर उसे 'लालची' के समान गंदा नहीं माना जाता।

'लुब्ध' बराबर 'लोभवाला' है और 'मोहित' के निकट है। 'लुभाना' बराबर 'किसी में लोभ पैदा करना' है और 'मोहित करना' के निकट है। 'लुभावना' बराबर 'लुभानेवाला' है और 'मोहित करनेवाला' के निकट है।

'लोलुप' में भी 'लुभ्' धातु है, जिस की वजह से यह 'लोभी' तो है ही, अर्थविस्तार के फलस्वरूप 'चटोरा' भी है।

प्रस्तुति -अनिल तिवारी

प्रकाशन विभाग

संस्थान प्रकाशनों की बिक्री से संबंधित भुगतान को ऑनलाइन स्वीकार करने की सुविधा उपलब्ध है इसके लिए पृथक से खाता खोला गया है। क्यू आर कोड के माध्यम से भी भुगतान किया जा सकता है। खाता विवरण इस प्रकार है-

Account Holder's Name: THE KENDRIYA HINDI SHIKSHANA MANDAL AGRA
Account Number : 42583260224
IFSC : SBIN0017686
MICR : 282002047
Branch : KHANDARI CROSSING AGRA

नोटः 1. संस्थान की प्रकाशन सूची संस्थान वेबसाईट www.hindisansthan.in पर उपलब्ध है।

2. सूची में से चयनित पुस्तकों का क्रयादेश ई-मेल publicationmanagerkhs@gmail.com पर भेजा जा सकता है।

Merchant Name : THE KENDRIYA HINDI SHIKHSANA MANDAL
UPI ID : thekhsmagra@sbi

पृष्ठ 1 का शेष...

को सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष 'विश्व हिंदी दिवस' के उपलक्ष्य में विदेश मंत्रालय के अनुरोध पर दिनांक 20.12.2024को केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग में सत्र 2024-25 में अध्ययनरनत विदेशी विद्यार्थियों के मध्य भाषण प्रतियोगिता (कनिष्ठ/वरिष्ठ वर्ग) आयोजित की गई।

इस प्रतियोगिता के कनिष्ठ वर्ग में अस्मा महमूद मंसूर हसन एल्वकिल (इजिप्ट), प्रथम, मोरगोल्ले इन्दसुमन थेरो (श्रीलंका), द्वितीय, ननामि योशिदा (जापान), तृतीयतथा वरिष्ठ वर्ग में अत्तनायक मुदियन्सेलागे निमेषि हिरूनिका तिलकरत्न (श्रीलंका), प्रथम, कनक्क हेवागे पसन चतुरंग (श्रीलंका), द्वितीय,नोदिरा सैद् नाजारोवा (उज्बेकिस्तान), तृतीय स्थान प्राप्त किए। स्थान प्राप्त विदेशी विद्यार्थियों को विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 13 जनवरी, 2025 को विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली में सम्मानित किया गया।

हिंदी का विश्व और विश्व की हिंदी

कोई भी भाषा वैश्विक स्वरूप तभी धारण करती है जब उसके प्रयोक्ता विश्व के लगभग सभी कोनों में फैले हों, उसकी व्याकरणिक क्षमता विपुल तथा विराट हो, उसमें साहित्य सृजन की सुदीर्घ परंपरा हो, वह व्यापक पैमाने पर विचार-विनिमय करने योग्य हो तथा वैश्विक बाज़ार में संप्रेषक भाषा होने का दायित्व निभा सके; हिंदी भाषा इन सभी पैमानों पर खरी उतरती है।

हिंदी का अर्थ केवल 'खड़ी बोली' नहीं है, बल्कि वे सारी बोलियाँ तथा भाषाएँ हैं जिन्हें हिंदी ने अंगीकार किया है। हिंदी का अर्थ केवल खड़ी बोली या तत्सम और तद्भव ही नहीं बल्कि देशज और विदेशज भी हैं अब तो संकर शब्दों (दो भाषाओं को जोड़ कर बने शब्द यथा 'फोटोसाज', 'रेलगाड़ी' आदि) का प्रचलन भी ज़ोर पर है। आज मेज लिखें या टेबुल-दोनों हिंदी की धारा में समाहित है, अब गाँव पहुँचकर यही 'टेबुल' शब्द 'टेबुलवा' हो जाएगा जैसे की 'बच्चा' से 'बचवा'। किसी भी ग्राह्य शब्द को हिंदी इस प्रकार अपने में रचा बसा लेती है कि उससे पराएपन का बोध हमेशा हमेशा के लिए समाप्त हो जाता है। उर्दू, फारसी, अरबी, पुर्तगाली, फ्रेंच तथा अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं के शब्द आज अभेद रूप से हिंदीमय हो गए हैं, साथ ही विश्व के अधिकतर देशों में हिंदी विनिमय की भाषा है। विदेशों में प्रयुक्त हिंदी निस्संदेह भिन्न है, उस पर स्थानीय प्रभाव स्वाभाविक है, सूरीनाम में सरनामी, मॉरीशस में क्रियोल, फ्रीजी में फ्रीजीबात, दक्षिण अफ्रीका में नैताली, यूरोप तथा अमेरिका महाद्वीप में स्थानिक लहजे में में प्रयुक्त की जाती है।

वैश्वीकरण के दौर में यह केवल शिक्षा एवं साहित्य की भाषा की परिधि तक सीमित न रहकर वैश्विक परिदृश्य में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बना रही है। आज विश्व में हिंदी के प्रचलन का अवलोकन करें तो हम पाएंगे कि आज हिंदी वैश्विक स्तर पर साहित्य, संपर्क, संचार तथा वाणिज्य की भाषा के रूप में प्रचलित है।

मनुष्य की प्रवृत्ति सदैव यायावरी रही है इसी का प्रमाण है वर्तमान में हिंदी साहित्य की सर्वप्रचलित धारा-प्रवासी साहित्य। प्रवासी साहित्य से अभिप्राय ऐसे साहित्य सृजन से है जो विदेशी भूमि पर रचा गया हो। हिंदी भाषा में रचित प्रवासी साहित्य में दो प्रकार की धाराएँ देखने को मिलती हैं पहली, गिरमिटिया जीवन से सम्बद्ध रचनाकारों की, जिनके परिवारों को जबरन विदेशों (मॉरीशस, फीजी, सूरीनाम, त्रिनिडाड, दक्षिण अफ्रीका आदि) में मजदूरी के लिए ले जाया गया तथा दूसरी उन रचनाकारों की जो शिक्षा, नौकरी, विवाह आदि कारणों से विदेश गए, और फिर वहाँ स्व-भाषा में साहित्य-सृजन किया। दोनों ही धाराओं ने हिंदी भाषा तथा भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार किया। आज मॉरीशस के अभिमन्यु अनत, लंदन के तेजेंद्र शर्मा, अमेरिका की सुषम बेदी, ऑस्ट्रेलिया की रीता कौशल आदि हिंदी के जाने माने प्रवासी साहित्यकार हैं।

वर्तमान समय में हिंदी भारत की संपर्क भाषा के पद से आगे बढ़कर अंतरराष्ट्रीय 'संपर्क भाषा' के रूप में प्रतिष्ठित हो रही है जिसमें सर्वाधिक योगदान विश्व हिंदी सम्मेलन का रहा है। विश्व हिंदी सम्मेलन हिंदी भाषा का सबसे बड़ा अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन है, जिसमें विश्व भर से हिंदी विद्वान, साहित्यकार, पत्रकार, भाषा विज्ञानी, विषय विशेषज्ञ तथा हिंदी प्रेमी जुटते हैं। अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के प्रति जागरुकता पैदा करने, समय-समय पर हिंदी की विकास यात्रा का आकलन करने, लेखक व पाठक दोनों के स्तर पर हिंदी साहित्य के प्रति सरोकारों को और दृढ़ करने, और प्रमुख रूप से 'हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने' के प्रस्ताव को लेकर अब तक 12 विश्व हिंदी सम्मेलन सम्पन्न हो चुके हैं। यह आशा की जा सकती है कि आगामी सम्मेलनों के दौरान हिंदी संयुक्त राष्ट्र संघ में अपना स्थान निश्चित रूप से ग्रहण करेगी।

वर्तमान तकनीकी युग में मनुष्य के विचारों विनिमय हेतु संचार माध्यम के रूप में सोशल मीडिया का मंच प्राप्त हुआ है।व्यक्ति से सरकार तक, साहित्यकर्मी से समाजकर्मी तथा नेता से अभिनेता तक, सभी को सोशल मीडिया में उनकी धाक्, प्रभाव तथा लोकप्रियता की कसौटी पर तौला जा रहा है। ऐसे में अभिव्यक्ति की भाषा का महत्त्व अत्यधिक बढ़ जाता है। आज हिंदी विश्व की लगभग सभी सोशल मीडिया साइटों पर प्रचलित है। फ़ेसबुक, व्हाट्सप्प, इंस्टाग्राम, यू ट्यूब जैसी वैश्विक सोशल मीडिया साइटों में आज सर्वाधिक उपयोगकर्ता भारत के हैं, जो हिंदी भाषी हैं। अतः आज सभी प्लेटफॉर्म हिंदी में कंटेन्ट बनाने तथा प्रसारित करने की व्यवस्था करते हैं।

आज 800 मिलियन से भी अधिक उपयोगकर्ताओं के साथ भारत विश्व वाणिज्य के क्षेत्र में ई-कॉमर्स के क्षेत्र में अपना परचम लहरा रहा है। अनुमान है कि भारत ई-कॉमर्स के लिए 7वां सबसे बड़ा बाजार है, जिसके 2027 तक 427 मिलियन इंटरनेट खरीदार होंगे। इस वृद्धि का कारण सस्ती कीमतों पर इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों तथा इंटरनेट का उपलब्ध होना है। यह तो है आर्थिक कारण, परंतु यदि व्यावहारिक कारण पर ध्यान दें तो हम पाएंगे कि आज विश्व का लगभग प्रत्येक ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में अपना अपने उत्पादों का प्रचार-प्रसार कर रहा है। अमेज़न, फ्लिपकार्ट, मीशो, नाइका, जैसी लोकप्रिय ई-कॉमर्स साइटें वैश्विक उत्पादों को बेचने के लिए संचालन हेतु हिंदी भाषा का प्रयोग करती हैं।

इस प्रकार आज समस्त विश्व हिंदी का और हिंदी समस्त विश्व की साहित्यिक, संपर्क, संचार तथा वाणिज्य की भाषा बनने की ओर अग्रसर है।

प्रस्तुति : शिवानी चौहान

हिंदी भाषा 'विविधता में एकता'

नरेन्द्र दामोदर दास मोदी
(प्रधानमंत्री)

भाषा एक सेतु की तरह है जो हमें अतीत से जोड़ती है और भविष्य की संभावनाओं की ओर ले जाती है। भाषा के जरिए ही एक समाज अपने ज्ञान, संस्कृति एवं संस्कार को भावी पीढ़ियों तक पहुँचाता है और नए विचारों एवं नवाचारों को प्रभावी रूप से आगे लाने का माध्यम बनता है। हम भाग्यशाली हैं कि हमारे देश में सदियों से विभिन्न भाषाएं पुष्पित-पल्लवित होती रही हैं और इनका सह-अस्तित्व हमारे देश की विशेषता है। हिंदी भाषा 'विविधता में एकता' की हमारी इस परंपरा को और सशक्त करती है।

डिजिटल युग में हिंदी के प्रचार-प्रसार को एक नई गति प्राप्त हुई है। नए तकनीकी युग, सोशल मीडिया और ऑनलाइन माध्यमों के बढ़ते उपयोग ने इसे विशेष रूप से युवाओं के बीच एक रुचिकर भाषा के रूप में स्थापित किया है। मुझे विश्वास है कि विश्व हिंदी दिवस पर हिंदी को समृद्ध बनाने के संकल्प को दोहराकर हम आगे बढ़ेंगे। इस विश्वास के साथ एक बार पुनः सभी भाषा प्रेमियों, विदेश मंत्रालय और भारतीय मिशनों एवं केंद्रों के साथियों को विश्व हिंदी दिवस की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

हिंदी केवल एक भाषा नहीं भारतीयता की पहचान

धमेंद्र प्रधान
शिक्षा मंत्री (भारत सरकार)

हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि यह हमारी संस्कृति, सभ्यता और इतिहास की अमूल्य धरोहर है। हिंदी भाषा हमारे देश को जोड़ने की एक सशक्त माध्यम होने के साथ ही, पूरे विश्व में भारतीयता की पहचान और संवेदनाओं का प्रतिबिंब भी है। हिंदी विविधता में एकता के हमारे भारतीय आदर्श को प्रदर्शित करती है। आइए, हम सभी मिलकर हिंदी और भारतीय भाषाओं को अपने जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाएं और इसे आने वाली पीढ़ियों तक गर्व के साथ पहुँचाएँ। आप सभी को 'विश्व हिंदी दिवस' की हार्दिक शुभकामनाएँ।

संरक्षक
प्रो. सुरेन्द्र दुबे

प्रधान संपादक
प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी

संपादक
डॉ. अपर्णा सारस्वत

संपादन सहयोग
अनिल तिवारी

टाइप सेटिंग
योगेन्द्र सिंह राणा

मुद्रक : एजुकेशनल स्टोर्स, गाजियाबाद (उ.प्र.)

संस्थान समाचार में प्रकाशित समाचारों का स्रोत केंद्रीय हिंदी संस्थान के विभिन्न विभागों/केंद्रों से प्राप्त सामग्री है। संस्थान समाचार के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया और सुझाव संपादक के पास भेज सकते हैं।
संस्थान समाचार का ई-मेल: sansthansamacharkhs2021@gmail.com

सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल आगरा-282005 द्वारा वितरण हेतु दिल्ली केंद्र से प्रकाशित।